

क्रतुपुरुष पुं. (तत्.) विष्णु।

क्रतुफल पुं. (तत्.) यज्ञ का उद्देश्य 2. यज्ञ का फल 3. स्वर्ग।

क्रतुभुक् पुं. (तत्.) 1. वह पदार्थ जो यज्ञ में देवताओं को अर्पित किया जाता है 2. देवता, सुर।

क्रतुभुज पुं. (तत्.) दे. क्रतुभुक्।

क्रतुराज पुं. (तत्.) 1. ऐसा यज्ञ जो सब यज्ञों में श्रेष्ठ माना जाए 2. राजसूय यज्ञ 3. अश्वमेध यज्ञ।

क्रम पुं. ((तत्.) 1. वस्तुओं, घटनाओं, कार्यों व्यक्तियों आदि का आगे पीछे होने का नियम 2. पूर्वापर व्यवस्था, तरतीब, प्रणाली 3. किसी कार्य को सिलसिलेवार करने का नियम 4. पैर रखने की क्रिया, डग भरने की क्रिया 5. किस कार्य के बाद कौन सा कार्य करें इसका विधान 6. आक्रमण 7. काव्यालंकार का वह भेद जिसमें पहले कही गई वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय, इसे यथासंख्य अलंकार भी कहते हैं जैसे- अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत स्याम रतनार। जियत, मरत, झुकि झुकि परत जेहि चितवत एकबार।

क्रमदंडक पुं. (तत्.) वेदपाठ का एक प्रकार।

क्रमपाठ पुं. (तत्.) संहिता और पाद दोनों को मिलाकर वेदपाठ करना।

क्रमबद्ध वि. (तत्.) क्रम के अनुसार व्यवस्थित।

क्रमभंग पुं. (तत्.) सिलसिला टूट जाना।

क्रमविकास पुं. (तत्.) धीरे धीरे होने वाला विकास।

क्रमशः क्रि.वि. (तत्.) 1. क्रम से, सिलसिलेवार, धीरे धीरे।

क्रमसंख्या स्त्री. (तत्.) क्रम को व्यक्त करने वाली संख्या।

क्रमांक पुं. (तत्.) दे. क्रमसंख्या।

क्रमागत वि. (तत्.) 1. क्रमशः किसी रूप को प्राप्त 2. जो सदा से होता आया हो, परंपरागत।

क्रमानुकूल वि. (तत्.) श्रेणी के अनुसार, क्रम से, सिलसिलेवार।

क्रमान्वय पुं. (तत्.) एक के बाद एक।

क्रमिक पुं.वि. (तत्.) 1. क्रमयुक्त, क्रमागत 2. परंपरागत।

क्रमिकता स्त्री. (तत्.) क्रमबद्ध होने की स्थिति।

क्रमेलक पुं. (तत्.) ऊँट, शूतुर।

क्रय पुं. (तत्.) मोल लेने की क्रिया, खरीद।

क्रयक्रीत वि. (तत्.) खरीदा या मोल लिया हुआ।

क्रयण पुं. (तत्.) खरीद, क्रय।

क्रयलेख पुं. (तत्.) विक्रयपत्र, बैनामा।

क्रयविक्रय वि. (तत्.) खरीदने और बेचने की क्रिया।

क्रयविक्रयिक पुं. (तत्.) व्यापारी, सौदागर।

क्रयारोह पुं. (तत्.) वह स्थान जहाँ खरीदने बेचने का काम होता हो, बाजार, मंडी।

क्रयी पुं. (तत्.) मोल लेने वाला।

क्रव्य पुं. (तत्.) कच्चा मांस, गोश्त।

क्रव्याद वि. (तत्.) कच्चा मांस खानेवाला पुं. (तत्.) 1. मांसभक्षी, 2. राक्षस 3. मृत शरीर खाने वाला स्त्री. 1. वह आग जिससे शव जलाया जाता है, चिता की आग।

क्रशित वि. (तत्.) क्षीण काय, दुबला-पतला।

क्रांत वि. (तत्.) 1. लांघा हुआ, ऊपर से आकर दबाया हुआ 2. आगे बढ़ा हुआ, जात 3. जिससे आगे कोई बढ़ गया हो 4. वश में किया हुआ पुं. (तत्.) 1. पाँव 2. घोड़ा।

क्रांति स्त्री. (तत्.) 1. किसी स्थिति में भारी परिवर्तन, उलट फेर जैसे- राज्यक्रांति 2. डग भरने की क्रिया, कदम रखना, गति 3. खगोल में वह कल्पित वृत्त, जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता जान पड़ता है पर्वी. अपमंडल, अपवृत्त, अपक्रम।